अधीनस्थ समूहों का परिप्रेक्ष्य
डेविड हार्डीमैन

Dr. Utpal Kumar Chakraborty
Department of Sociology
ABM College, Jamshedpur

डेविड हार्डीमैन जन्म अक्टुबर 1947 ई0 में पाकिस्तान के रावलपिंडी में हुआ। आपने लिक्सेस्टर विश्वविद्यालय तथा ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालयों में अध्ययन किया वर्तमान में यह यूनिवर्सिटी ऑफ वारविक, यूके से सम्बद्ध है। **1980 में आप सूरत स्थित 'सेंटर फॉर स्टडीज इन सोशल साइंसेज' के रिसर्च फेला के छात्र रहे।** 1981 ई0 में डेविड हार्डीमैन सामाजिक विज्ञान संस्थान कलकत्ता से सम्बद्ध रहे। आप एक विशद लेखक रहे हैं इसके साथ ही आपके द्वारा **अधीनस्थ समूह परिप्रेक्ष्य को विकसित किया गया।** डेविड हार्डीमैन इस **अधीनस्थ समूह अध्ययन समूह के संस्थापक सदस्य थे** सबसे उल्लेखनीय बात यह रही कि **1982 ई0 के बाद** आपकी **जो भी रचनाएँ प्रकाशित हुई वे सब के सब अधीनस्थ समूह परिप्रेक्ष्य से सम्बन्धित थे।**

डेविड हार्डीमैन ने महाँत्मा गाँधी के भारत एवं विश्व में उनकी विरासत पर एक किताब लिखी। जो महाँत्मा गाँधी पर उनका विशेश अध्ययन है। इस किताब में महाँत्मा गाँधी जी के समय की स्थिति तथा सामाजिक परिवेश का गहन अध्ययन किया गया है। भारत में रहते हुए महाँत्मा गाँधी की विरासत का आँकलन करने में महत्वपूर्ण भूमिका रही है।डेविड हार्डीमैन ने भारत में शोशितों, दलितों एवं आदिवासियों का अध्ययन किया, तथा अपने अध्ययन में पाया कि कैसे प्रभुत्वशाली वर्ग, साहूकार इनका शोशण करते हैं और किस प्रकार से राजसत्ता का उपयोग ये इनका शोशण करने के लिए किया करते हैं। साथ ही इन्होंने यह भी पाया कि शोशितों का शोशण किस प्रकार से किया जाय कि उन में इनके प्रति (साहूकार, प्रभुत्वशाली वर्ग) विद्रोह भी न पनप सके।

डेविड हार्डीमैन द्वारा किया गया विभिन्न अध्ययन

1. दक्षिण गुजरात में देवी आंदोलन
2. प्रतिरोध की उत्पत्ति
3. बनियों को दूध पिलाना

पद्धतिशास्त्र

डेविड हार्डीमैन ने अपने अध्ययनों जिन पद्धतिशास्त्र का प्रयोग किया वह है अधीनस्थ समूहों का परिप्रेक्ष्य है। यह परिप्रेक्ष्य भारतीय समाज के अध्ययन का एक तरीका है। इस परिप्रेक्ष्य के माध्यम से आदिवासी तथा किसान आंदोलनों की समझा जा सकता है। यह समाज के उच्च्च तथा निम्न लोगों के बीच राजनीति का समझने का एक महत्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य है।यह परिप्रेक्ष्य स्वयं का ही अपना इतिहास बनाने का प्रयास करता है आदिवासियों, किसान, दलित एवं कृशक मजदूर इतिहास के पात्र रहे हैं लेकिन यह परिप्रेक्ष्य उनके द्वारा स्वयं के इतिहास लेखन की क्रिया है। यह बदलती हुई परिस्थितियों में उत्पन्न जागरूकता की हैं।

अधीनस्थ समूह परिप्रेक्ष्य

अधीनस्थ समूह परिप्रेक्ष्य भारतीय समाज में दलितों, शोशितों एवं निम्न वर्ग के लोगों का अध्ययन का एक तरीका है। डेविड हार्डीमैन ने इस परिप्रेक्ष्य का उपयोग कर भारतीय समाज का अध्ययन किया। इस परिप्रेक्ष्य का उपयोग कर भारतीय समाज का अध्ययन करने वाले प्रमुख विद्वान **डॉ. भीमराव अम्बेडकर, रणजीत गुहा, डेविड हार्डीमैन तथा कपिल कुमार आदि हैं। अधीनस्थ समूह परिप्रेक्ष्य यह बताता है कि इतिहास सिर्फ राजाओं महाराजाओं एवं राश्ट्रवाद का वर्णन नही है बल्कि इसमें कमजोर, दलित एवं शोशित लोगों के आवाज इसमें शामिल हैं। अतः इतिहास का पुनःलेखन किया जाना चाहिए।**यही कारण है यह परिप्रेक्ष्य राजाओं, महाराजाओं के इतिहास को छोड़कर अधीनस्थ समूह जैसे किसान, गरीब, दलित, भूमिहीन श्रमिक एवं शोशित किसान पर अपना ध्यान केन्द्रित करता है। यह परिप्रेक्ष्य इस बात पर भी बल देता है कि कैसे अधीनस्थ समूह में स्वयं के प्रति चेतना आती है। इस चेतना के पीछे अधीनस्थ समूह के विभिन्न आंदोलनों का हाथ है जो किसानों, आदिवासियों एवं साहूकारों तथा नगरीय व्यापारियों के बीच हन्द के कारण उत्पन्न हुआ। ब्रिटिश भाासन व्यवस्था के विरूद्ध भी अधीनस्थ समूह के लोगों ने संघर्श किया। इन **संघर्शों का ही परिणाम था कि अधीनस्थ समूह के लोगों में जागृति आई एवं वे अपनी स्थिति सुधारने में सफल रहे।**

दक्षिण गुजरात में देवी आंदोलन

डेविड हार्डीमैन ने दक्षिण गुजरात में देवी आंदोलन के अपने अध्ययन अधीनस्थ समूह परिप्रेक्ष्य का उपयोग किया। इन्होने दक्षिण गुजरात में 20 वीं भाताब्दी के शुरूवाती दिनों में जिस जन आंदोलन को देखा उसे वहाॅ देवी आंदोलन कहा गया है। यह एक शांतिपूर्ण आंदोलन था जो यहाँ के जनजातीय लोगों के नेतृत्व में एक विस्तृत क्षेत्र में फैला था। इस आंदोलन में काफी संख्या में लोग शामिल थे और यह आंदोलन यहाँ के आदिवासियों में सामाजिक सुधार लाने पर आधारित था। इस आंदोलन का नेतृत्व स्वयं आदिवासियों ने ही किया। वर्तमान सरकार अखबारों राश्ट्रवादियों और बाद के इतिहासकारों में इसे नजर अंदाज कर दिया है। ऐसे आंदोलनों पर कोई पूर्ण मोनोग्राफ भी नहीं है और न ही महत्वपूर्ण गतिविधियों के दस्तावेज मौजूद है। जो आंदोलन समाजवादियों द्वारा निर्देशित हो रहे थे वे आदिवासी क्षेत्र के बाहर से आए लोग थे। इस आंदोलन के लिए आदिवासियों के लिए न ही कोई प्रोत्साहन था और न ही कोई आधार। हार्डीमैन ने देखा कि आदिवासी जीवन के मौजूद पर्यवेक्षकों ने आदिवासियों के अस्तित्व को चुनौति दी और बताया कि आदिवासियों में कोई क्षमता है। इस प्रकार आदिवासी अस्तित्व का इस प्रकार से नकारा गया। हाडिमैन तथा अन्य अधीनस्त समूहो पर कार्यरत लोगों ने इसकी आलोचना की।

प्रतिरोध की उत्पति

- आदिवासियों को मद्यपान, शराब के विरुद्ध कई व्यक्ति और समूहों ने चेतावनी दी थी। इसमें ग्रामीण अभिजात की और गाँव के भजन मंडल समूह शामिल है लेकिन आदिवासियों के चेतना में महत्वपूर्ण परिर्वतन देवी आंदोलन के साथ आया। डेविड हार्डीमैन ने अपनी पुस्तक 'कमिंग ऑफ देवी' में पश्चिमी भारत में साहूकारों द्वारा आदिवासियों के शोशण के सम्बन्ध में विस्तृत चर्चा की है। इनके अनुसार 1921 ई0 में पालघर तालुक के मछुवारों कें बीच देवी आंदोलन एक छोटे से प्रायोजित समारोह के रूप में शुरु हुआ और बाद में यह गुजरात के अन्य क्षेत्रों में फैल गया। देवी आंदोलन के सम्बन्ध में डेविड हार्डीमैन ने देखा कि किस प्रकार आदिवासियों ने स्वयं को सामाजिक सुधार आंदोलन में शामिल किया बल्कि जमीनदारों एवं पारसी शराब विक्रेताओं के वर्चस्व के विरुद्ध विद्रोह भी किया।

- देवी आंदोलन के सम्बन्ध में देवी के बारे में डेविड हार्डीमैन बताते है कि पश्चिमी भारत में यह मान्यता बनी हुई थी कि देवी पूर्व के पहाड़ी से उत्तरी और उनकी माँग आत्मा के माध्यम से मुख द्वारा व्यक्त किया गया। भोपा अपने आदमियों के साथ लाल कपड़ा लेकर बैठता था और आत्मा के आने पर जोर–जोर से सिर हिलाता था तभी देवी की आज्ञाएँ सुनाई देती थी ये आज्ञाएँ निम्न है–
- 1–शराब और ताड़ी पीना बन्द करो।
- 2–माँस खाना बन्द करो।
- 3–साफ–सुथरा और सादा जीवन जीओ।
- 4–स्वच्छता से रहो।
- 5–आदमी को दिन में दो बार स्नान करना चाहिए।
- 6–औरतों को दिन में दो बार नहाना चाहिए।
- 7–पारसियों से कोई सम्बन्ध नहीं रखें।

- जब ये आज्ञाएँ समाप्त हो गई तब देवी के रूप में तैयार की गई लड़की को सिक्कों का उपहार भेंट किये जाते थे और अंत में सभी लोग भण्डारा (एक साथ भोजन) करते थे। सामूहिकता और देवी के शब्द ने आदिवासियों के बीच चेतना में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किया। इससे भााहूकारों और पारसियों के पंजों से मुक्ति मिली इसके साथ–साथ आदिवासियों में राजनीतिक लाम्बंदी बढ़ी एवं अंततः उनके जीवन स्तर में सुधार हुआ इस प्रकार हार्डीमैन मानते है किइस देवी आंदोलन के कारण आदिवासियों को सम्पूर्ण मुक्ति मिल गई।

बनिया को दूध पिलाना

’फीडिंग द बनिया’ नामक पुस्तक में हार्डीमैन ने शताब्दियों से ग्रामीण भारत में अधीनस्थ समूहों के ऊपर लोगों द्वारा शक्ति प्रयोग के स्वरूपों के सम्बन्ध में चर्चा किया है। हार्डीमैन ने ’बनिया को दूध पिला’ नामक पुस्तक में बताया है कि कैसे बनियों ने आदिवासियों तथा स्थानीय लोगों का शोशण सदियों से किया है और राज्य कैसे बनियों को संरक्षण प्रदान करती है। अपने अध्ययन में हार्डीमैन पाते हैं कि आकाल के समय ये बनिये आदिवासियों एवं स्थानीय किसानों को ऋण प्रदान करते हैं और अपनी सहानुभूति भी इनके प्रति दर्शाते हैं और बाद ब्याज देते रहें। यह सिल–सिला पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहता है। किसान तथा आदिवासी कभी भी इन बनियों के कर्ज से मुक्त नहीं हो पाते। ब्रिटिश शासन प्रणाली भी अधीनस्थ समूहों के भोशण में योगदान दिया लेकिन इन अधीनस्थ समूहों जिसके अन्तर्गत दस्ताकार, भुमिहीन कृशक, दलित, आदिवासी आदि आते हैं ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह किया एवं अपनी स्थिति से सुधार लाया।